

# डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, क्राइस्टोलॉजी, सत्र 20, सिस्टमैटिक्स, क्राइस्ट की मानवता, गुणों का संचार, गुणों का प्रयोग, दो अवस्थाएँ, फिलिप्पियों 2:1-11

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा क्राइस्टोलॉजी पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 20 है, सिस्टमैटिक्स, मसीह की मानवता, गुणों का संचार, गुणों का प्रयोग, दो अवस्थाएँ, फिलिप्पियों 2:1 से 11।

हम गुणों के संचार का अध्ययन करना जारी रखते हैं, जो एक शास्त्रीय घटना है जिसके द्वारा, एक ही वाक्य में, न केवल एक अंश बल्कि एक ही वाक्य में, शास्त्र मसीह को एक दिव्य शीर्षक से संदर्भित करता है, लेकिन उसे वह विशेषता देता है जो ईश्वरत्व के अनुरूप नहीं बल्कि मानवता के अनुरूप है।

यह उसे एक ईश्वरीय उपाधि देने के लिए, उसे उसी वाक्य में एक मानवीय गुण देने के लिए एक मानवीय उपाधि का उपयोग करता है। हम इसे 1 कुरिन्थियों 2 में भी देखते हैं। पौलुस ने ऐसी स्थिति में बात की जहाँ यूनानी लोग बयानबाज़ी को महत्व देते थे, एक प्रेरक भाषण जो दूसरों को प्रभावित कर सकता था।

उस संदर्भ में, पॉल कुरिन्थ में आता है, और वह एक क्रूस पर चढ़े हुए व्यक्ति के बारे में प्रचार करता है। इससे उसे दोस्त नहीं मिलेंगे और न ही लोगों पर उसका प्रभाव पड़ेगा। उसने यीशु मसीह और क्रूस पर चढ़े हुए व्यक्ति के अलावा और कुछ नहीं जानने का निश्चय किया।

और वह कहता है कि मसीह यहूदियों के लिए ठोकर का कारण है और यूनानियों के लिए मूर्खता है। फिर भी, वह परमेश्वर की बुद्धि और शक्ति है। पॉल पुष्टि करता है कि परमेश्वर के पास बुद्धि है।

मैं अध्याय 2 से शुरू करता हूँ। और जब मैं तुम्हारे पास आया, भाइयों, तो मैं तुम्हारे सामने परमेश्वर की गवाही को ऊँची आवाज़ में या बुद्धि से नहीं सुनाने आया, जो कि यूनानी तरीका था। इन वक्ताओं को भोज में बोलने, सार्वजनिक रूप से भाषण देने आदि के लिए काफी पैसे दिए जाते थे। और एक वक्ता वाक्पटुता, वाक्पटुता और अनुनय के मामले में दूसरे से आगे निकलने की कोशिश करता था।

क्योंकि मैंने तुम्हारे बीच यीशु मसीह, वरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और कुछ भी न जानने का निश्चय किया था। और मैं निर्बलता, और भय, और बहुत थरथराता हुआ तुम्हारे साथ रहा। और मेरे वचन, और मेरे वचन ज्ञान की सुन्दर बातें नहीं, परन्तु आत्मा और सामर्थ की गवाही थी।

इसलिये कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, वरन परमेश्वर की सामर्थ पर आधारित हो; तौभी हम सयाने लोगों के बीच ज्ञान देते हैं, यद्यपि वह इस युग का ज्ञान नहीं, और न इस युग के हाकिमों का, जो मिटने वाले हैं।

लेकिन हम परमेश्वर के गुप्त और छिपे हुए ज्ञान को बताते हैं, जिसे परमेश्वर ने हमारी महिमा के लिए युगों से पहले निर्धारित किया था। इस युग के शासकों में से किसी ने भी इसे नहीं समझा, क्योंकि अगर उन्होंने समझा होता, तो वे महिमा के प्रभु को क्रूस पर नहीं चढ़ाते। एक और है।

महिमा के प्रभु को क्रूस पर चढ़ाना निश्चित रूप से एक दिव्य उपाधि है। महिमा के प्रभु, या हम इसे गौरवशाली प्रभु कह सकते हैं। जाहिर है, मानवीय गुण फिर से नश्वरता है, नश्वर होना, मृत्यु के योग्य होना।

वास्तव में, क्रूस पर चढ़ाने की भयानक विधि के माध्यम से मारे जाने से। इस दुनिया के शासकों ने अपनी महान मूर्खता को उस काम में दिखाया जिसे वे महान बुद्धि मानते थे। यह पूरी तरह से मूर्खता, पूरी तरह से मूर्खता और परमेश्वर और उसके तरीकों के बारे में अज्ञानता थी।

क्योंकि उन्होंने महिमावान प्रभु को क्रूस पर चढ़ाया। दिव्य उपाधि, महिमा का प्रभु। मानवीय गुण, क्रूस पर चढ़ना।

नश्वर होना। न केवल मरने में सक्षम होना बल्कि मरना। यह भी गुणों का संचार है।

इसका नकद मूल्य क्या है? यह मसीह के व्यक्तित्व की एकता पर जोर देता है। क्योंकि उसे एक दिव्य उपाधि से संदर्भित किया जाता है। और उसी सांस में, उसके बारे में जो कहा जाता है वह उसकी मानवता से संबंधित है, न कि उसके देवता से।

आइए इसे फिर से सही करें, मैं उद्धरण चिह्नों में कहता हूँ। उन्होंने महिमा के भगवान की पूजा की। उन्होंने महिमा के भगवान की प्रशंसा में अपने भजन गाए।

ऐसा नहीं कहा गया है। न ही यह कहा गया है कि उन्होंने इस आदमी को सूली पर चढ़ाया, जो दुखों से भरा हुआ था और दुख से परिचित था। यह मानवीय पदनाम, मानवीय आरोपण होगा।

दूसरे मामले में, यह ईश्वरीय पदनाम है, महिमा का स्वामी, ईश्वरीय गुणगान। पूजा और प्रशंसा के योग्य। नहीं, यह पार है।

यह संवाद करता है। यह एक प्रकृति को दूसरे के साथ साझा करता है, उसे ईश्वर कहकर। लेकिन बहुत हद तक उसे ईश्वर से नहीं, बल्कि मानवीय मामलों से संबंधित मानता है। शायद सबसे मजबूत 1 यूहन्ना 1 है। यह यूनानियों को बिल्कुल पागल कर देगा।

ओह, मेरा वचन। परमेश्वर के बारे में यह जो कहता है वह हेलेनिस्टिक दर्शन के बिलकुल विपरीत है। यूहन्ना कहता है कि जो शुरू से था, जिसे हमने सुना है, जिसे हमने अपनी आँखों से देखा है, जिसे हमने ध्यान से देखा है और जिसे हमने अपने हाथों से छुआ है, वह जीवन का वचन है।

जीवन प्रकट हुआ, और हमने इसे देखा, इसकी गवाही दी, और तुम्हें उस अनन्त जीवन का प्रचार किया, जो पिता के साथ था और हमारे लिए प्रकट हुआ। हम वही प्रचार करते हैं जो हमने देखा और सुना है ताकि तुम भी हमारे साथ सहभागिता करो। और वास्तव में, हमारी सहभागिता पिता और उसके पुत्र, यीशु मसीह के साथ है।

और हम ये बातें इसलिए लिख रहे हैं ताकि हमारा आनन्द पूरा हो सके। एक यूनानी के लिए, एक अविमुक्त यूनानी के लिए, यह सुनना अविश्वसनीय है। वे इस पर विश्वास नहीं कर सकते थे।

क्योंकि जीवन का शब्द, या इसे जीवित शब्द भी कहा जा सकता है, वही मूल्य, परमेश्वर का संदर्भ है। परमेश्वर का शब्द, यह एक व्यक्ति है जिसके बारे में वह बात कर रहा है, न कि किसी पृष्ठ पर लिखे कुछ शब्द, न ही शास्त्र, क्योंकि उन्होंने इसे सुना, उन्होंने इसे देखा, और उन्होंने इसे छुआ। यह एक यूनानी के लिए सरासर ईशनिंदा है।

क्या तुमने भगवान को देखा? क्या तुमने भगवान को सुना? और यहाँ हत्यारा है, तुमने जीवन के वचन को छुआ? तुम मूर्ख हो, तुम भगवान को छू नहीं सकते। खैर, यह सच है कि स्वर्ग में भगवान अदृश्य है और हमारे जैसा शरीर नहीं रखता है। लेकिन वास्तव में मुद्दा यह है कि, पृथ्वी पर अवतार में भगवान के पास हमारे जैसा शरीर है।

इसलिए प्रेरितों ने जिसे देखा, सुना और अपने हाथों से छुआ, वह जीवन का वचन था, सभी चीजों का निर्माता, पिता का प्रतिनिधि। यह आश्चर्यजनक है। ईश्वरीय उपाधि? जीवन का वचन।

मानवीय गुण? इंद्रियों के प्रति संवेदनशील होना। देखा जा सकने, सुना जा सकने और छुआ जा सकने में सक्षम होना। नकद मूल्य? इनमें से हर एक के लिए।

यह व्यक्ति को ईश्वर कहकर उसकी एकता पर जोर देता है और फिर उसके बारे में वही कहता है जो मानवता के लिए प्रासंगिक है, ईश्वर के लिए नहीं। मैं इसे सही कर देता हूँ। वे पूजा में झुकते थे।

वे जीवन के वचन के आगे झुक गए। ईश्वरीय उपाधि? ईश्वरीय क्रिया, अगर आप चाहें तो। मानवीय गुण।

आराधना परमेश्वर के साथ होती है। या उन्होंने नासरत के आदमी को देखा, सुना और छुआ - मरियम का बेटा।

जिनके पिता को हम जानते हैं, यूसुफ और उनके भाई-बहन। मानव उपाधि? मानव क्रिया, मानव गुण। यहाँ ऐसा कुछ नहीं हो रहा है।

उसे जीवन का वचन कहा गया है। और फिर भी उसके बारे में जो कहा गया है, वह सीधे तौर पर उसके जीवन का वचन होने से संबंधित नहीं है। बल्कि, यह उसके अस्तित्व से संबंधित है।

अपने आप में एक वास्तविक मानव स्वभाव को अपनाना। इस प्रकार, गुणों का संचार एक बाइबल आधारित बोलने का तरीका है जो व्यक्ति की एकता को रेखांकित करता है। इस एक व्यक्ति के दो स्वभाव हैं।

वह एक ही समय में ईश्वर और मनुष्य दोनों हैं। मैं लूका 1:43 को भी जोड़ूंगा जहां एलिज़ाबेथ ने मैरी का स्वागत किया। और मुझे नहीं पता कि एलिज़ाबेथ को यह कैसे पता चला।

शायद प्रभु ने उसे यह बताया था। उन दिनों में, मरियम उठी, लूका 1:39, और जल्दी से पहाड़ी इलाके में यहूदा के एक शहर में चली गई। और वह जकरयाह के घर में गई और एलिज़ाबेथ को नमस्कार किया।

और जब एलिज़ाबेथ ने मरियम का अभिवादन सुना, तो बच्चा उसके गर्भ में उछल पड़ा। जॉन बैपटिस्ट को काम शुरू करने का बेसब्री से इंतज़ार है। वह गर्भ में है, और वह पहले से ही अपनी सेवकाई शुरू कर रहा है, ऐसा कहा जा सकता है।

और इलीशिबा पवित्र आत्मा से भर गई। यह बात अक्सर बोलने और भविष्यवाणी करने के साथ होती है। और उसने ऊँची आवाज़ में पुकार कर कहा, तू स्त्रियों में धन्य है, और तेरे गर्भ का फल धन्य है।

और मुझे यह क्यों दिया गया कि मेरे प्रभु की माँ मेरे पास आए? क्योंकि देखो, जब तुम्हारे अभिवादन की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी, तो मेरे गर्भ में बच्चा खुशी से उछल पड़ा। धन्य है वह जिसने विश्वास किया कि प्रभु द्वारा उससे कही गई बातें पूरी होंगी। मेरे प्रभु की माँ।

भगवान, ईश्वरीय उपाधि। मुझे यकीन नहीं है कि एलिज़ाबेथ को इस बारे में कितना समझ है, लेकिन अभी हमारा मुद्दा यह नहीं है। भगवान समझते हैं।

ईश्वरीय उपाधि। क्या ईश्वर की कोई माँ है? क्या? हाँ, इस अर्थ में कि शाश्वत, सर्वशक्तिमान ईश्वर, ईश्वरत्व का दूसरा व्यक्ति, मैरी के गर्भ में अपनी मानवता के कुंवारी गर्भाधान के आधार पर एक वास्तविक मानव बन गया। इसलिए वह भगवान है, ईश्वरीय उपाधि, और उसके बारे में जो कहा जाता है वह ईश्वरत्व के लिए नहीं, बल्कि मानवता के लिए प्रासंगिक है।

मनुष्यों की माताएँ होती हैं, और उसकी भी थी। एक बार फिर, यह व्यक्ति की एकता पर जोर देता है। मैं, बहुत सम्मान के साथ, ईश्वरीय प्रकृति से लेकर मानव तक गुणों के एक ऑन्टोलॉजिकल शेयरिंग की धारणा का समर्थन नहीं करता, ताकि यीशु की मानवता सर्वव्यापी हो।

सम्मान के साथ, मैं कैल्विन से सहमत हूँ। मानव मसीह, दिव्य-मानव मसीह, पिता के दाहिने हाथ पर है, जहाँ से हम उसके लौटने की प्रतीक्षा करते हैं। तो, क्या आप कह रहे हैं कि यह केवल बोलने का एक तरीका है? हाँ।

क्या यह महज एक साहित्यिक युक्ति है? हाँ। एक शक्तिशाली युक्ति। यह किसी भी चीज़ के बारे में बात नहीं कर रहा है, ऑन्टोलॉजी में किसी भी बदलाव के बारे में नहीं।

लेकिन यह मसीह के व्यक्तित्व की एकता के चमत्कार के बारे में बात कर रहा है। हालाँकि, सुधारवादी और लूथरन इस बात पर सहमत थे कि इस अर्थ में गुणों का संचार था। सुसमाचारों में एक प्रकृति के बारे में जो कहा गया था वह पूरे व्यक्ति से संबंधित है।

कोई अलग नहीं है, और देहधारण से पहले परमेश्वर का एक अलग पुत्र था। लेकिन कोई अलग मानवता नहीं है। इसलिए, जब पवित्रशास्त्र उसकी मानवता, उसकी कमज़ोरी, उसके न जानने, उसके संघर्ष, उसके भूखे या प्यासे या थके होने या मरने के बारे में बात करता है, तो वह मसीह के व्यक्तित्व के बारे में कहता है।

कोई साधारण मनुष्य नहीं है। वह नेस्टोरियन है। नेस्टोरियन।

मुझे शायद यह वर्गीकरण बता देना चाहिए। यहाँ नेस्टोरियनवाद है। मसीह को दो भागों में विभाजित करना।

यहाँ सुधारवादी धर्मशास्त्र है। यह नेस्टोरियन नहीं है, लेकिन यह मोनोफ़िज़िटिज़्म या यूटीचियनिज़्म से ज़्यादा करीब है। यहाँ लूथरन धर्मशास्त्र है।

ओह, यह नेस्टोरियनवाद से कहीं ज़्यादा दूर है, न कि सुधारवादी धर्मशास्त्र से। यहाँ मोनोफ़िज़िटिज़्म या यूटीचियनवाद है, जो यह कहने के विपरीत कि वह दो हो सकता है, कहता है कि दो प्रकृतियाँ मिश्रित हैं। इसलिए वह न तो ईश्वर है और न ही मनुष्य, बल्कि वह एक संयोजन है।

वह एक संकर है, एक टेरटियम क्रिड, और तीसरा, कुछ और। अब, जैसे कि रिफॉर्मड नेस्टोरियन नहीं हैं, वैसे ही लूथरन यूटीचियन या मोनोफिसाइट नहीं हैं। यह भयानक है।

और फिर भी, यहाँ एक निरंतरता है। सुधारवादी मोनोफ़िज़िटिज़्म की तुलना में नेस्टोरियनवाद के अधिक निकट हैं। और मैंने रविवार स्कूल में कई लोगों को यह कहते सुना है, जब मैंने उनसे किसी चीज़ के बारे में पूछा, तो वे कहेंगे, ओह, वह आदमी।

अब, क्या उनका मतलब व्यक्ति को अलग करना था? नहीं। लेकिन क्या वे व्यक्ति को उसकी मानवता के संदर्भ में कहने में सावधान थे? नहीं। और मुझे खुशी है क्योंकि इसीलिए उन्हें मेरे जैसे शिक्षकों की ज़रूरत है।

यह हास्य का एक प्रयास था, जो स्पष्ट रूप से असफल रहा। और इसी तरह, लूथरन मोनोफिसाइट नहीं हैं। हाँ, मोनोफिसाइट।

वे मोनोफ़िज़िटिज़्म को नहीं मानते। वे यूटीकियन नहीं हैं। लेकिन संपत्ति के संचार की उनकी धारणा निश्चित रूप से उन्हें नेस्टोरियनवाद जैसी किसी भी चीज़ से ज़्यादा करीब रखती है।

हमारे पास चर्चा करने के लिए एक और क्षेत्र है। और यह मसीह के व्यक्तित्व की एकता के अंतर्गत है। और वह है हमारे प्रभु के गुणों का प्रयोग।

हम मसीह के दिव्य और मानवीय गुणों के प्रयोग को कैसे समझ सकते हैं, जबकि उनके व्यक्तित्व की एकता को नुकसान नहीं पहुँचाया जा रहा है? हमें यहाँ सावधान रहना होगा। हमें सावधान रहना होगा। स्पष्ट रूप से, शास्त्र उनके बारे में दिव्य शब्दों में बात करता है, उन्हें दिव्य उपाधियाँ देता है, और कभी-कभी दिव्य कार्य करता है।

कभी-कभी यह उसके बारे में बात करता है, और यह अच्छी तरह से कहा गया है; हर बार यही मुख्य बात है: यह उसके बारे में, व्यक्ति के बारे में, मानवीय शब्दों में बात करता है। थका हुआ, या कमज़ोर, या प्रलोभन में पड़ना, या मरना। मेरे पास कहने के लिए दो बातें हैं।

मैंने पहले भी कहा है, लेकिन व्यवस्थित धर्मशास्त्र बिल्कुल यही करता है। यह अपनी सच्चाइयों को श्रेणियों के अंतर्गत दोहराता है जो उम्मीद है कि उन्हें स्पष्ट, बेहतर ढंग से समझा जा सके और अधिक याद रखने योग्य बना सके, खासकर अन्य बाइबिल कथनों और धार्मिक सत्यों के संबंध में। नंबर एक, ईश्वर के पुत्र के अवतार के बारे में बोलने वाले सभी बाइबिल कथनों को पूरे व्यक्ति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए।

हालाँकि कुछ कथन एक ही प्रकृति का विशेष संदर्भ देते हैं, लेकिन देहधारी का हर कथन देहधारी का कथन है। वे परमेश्वर या उसकी मानवता के अलग-अलग कथन नहीं हैं।

कोई अलग मानवता नहीं है। और शाश्वत शब्द, शाश्वत पुत्र, नासरत के यीशु में पूरी तरह से अवतरित हुआ। इसलिए, जब हम यूहन्ना 4 में उसके बारे में पढ़ते हैं, तो यात्रा से थककर याकूब के कुएँ पर बैठ जाना, यह मनुष्य यीशु के बारे में नहीं कहा गया है।

यह ईश्वर-मनुष्य यीशु के बारे में कहा गया है। निश्चित रूप से, उनके ईश्वरीय स्वभाव पर विशेष जोर देने के साथ नहीं, बल्कि विशेष प्रमाण के साथ, उनके मानवीय स्वभाव पर विशेष जोर देने के साथ। जब वह यूहन्ना 10 में कहता है, मैं अच्छा चरवाहा हूँ।

मैं भेड़ों के लिए अपना जीवन देता हूँ। यह मसीह के व्यक्तित्व के बारे में उसकी मानवता के संदर्भ में कहा गया है। स्वर्ग में परमेश्वर मर नहीं सकता।

आश्चर्यजनक रूप से, इब्रानियों 2:14 हमें बताता है कि परमेश्वर स्वर्ग से नीचे इसलिए आया ताकि वह मर सके। ओह, न केवल इसलिए कि वह मर सके। उदाहरण के लिए, यीशु ने सिखाया, लेकिन निश्चित रूप से वह मुख्य रूप से मरने के लिए आया था।

इसलिए, इब्रानियों 2:14 में, बच्चे मांस और लहू में भागीदार हैं, इसलिए उसने भी उन्हीं चीजों में भाग लिया ताकि मृत्यु के द्वारा वह उस व्यक्ति को नष्ट कर सके जिसके पास मृत्यु की शक्ति है, अर्थात् शैतान, और उन सभी को छुड़ा सके जो मृत्यु के भय से आजीवन दासता के अधीन थे। क्योंकि वह परमेश्वर की संतानों से प्रेम करता था। परमेश्वर के पुत्र ने उनके मांस और लहू में भाग लिया ताकि वह मर सके और दुष्ट को हरा सके और अपने लोगों को छुड़ा सके।

धरती पर ईश्वर की मृत्यु हो गई। ईश्वर-मानव की मृत्यु हो गई। इस तरह का अंश निश्चित रूप से उसकी मानवीयता पर जोर देता है।

लेकिन आइए सावधान रहें और नेस्टोरियनवाद की ओर न झुकें। यह मनुष्य यीशु नहीं है। यह देहधारी पुत्र है, जो अपनी मानवता के लिए विशेष संदर्भ में है, जो अपने लोगों को छुड़ाने और दुष्ट को हराने के लिए मरता है।

यूहन्ना 10 पर वापस जाएँ। मैं अपना जीवन देता हूँ, और मैं इसे फिर ले लेता हूँ। कोई इसे मुझसे नहीं छीनता।

मैं अपनी इच्छा से ऐसा करता हूँ। मानवता, मानवता, मानवता। पिता ने मुझे ऐसा करने की आज्ञा दी है।

मानवता, मैं अपना जीवन समर्पित करता हूँ, और मैं इसे फिर से लेता हूँ। देवता दिव्य-मानव मसीह है जो खुद को ऊपर उठाता है। मैं विशेष रूप से व्यक्ति को अलग नहीं कर रहा हूँ।

आप देख सकते हैं कि हम अब क्या कह रहे हैं क्योंकि हम एक तरफ नेस्टोरियनवाद और दूसरी तरफ यूटीचियनवाद से बचते हैं। हम चाल्सीडॉन के सत्य को लागू कर रहे हैं कि ईश्वर का पुत्र बिना किसी भ्रम, प्रकृति के अवतार है। वह बिना किसी भ्रम और बिना किसी बदलाव के दो स्वभावों वाला एक व्यक्ति है।

यह मोनोफ़िज़िटीज़्म, यूटीचियनवाद का विरोध करता है। और बिना अलगाव और बिना विभाजन के। यह नेस्टोरियनवाद का विरोध करता है।

क्या हम बाइबल में उसके बारे में कही गई हर बात को पूरी तरह से समझ सकते हैं? नहीं। क्या हम हर कथन को किसी बड़े ग्रिड से अलग कर सकते हैं? ओह, यह वह एक इंसान के तौर पर करता है, यह वह भगवान के तौर पर करता है। नहीं, हम नहीं कर सकते।

लेकिन कभी-कभी, कुछ आयतें अन्य प्रकृतियों में से किसी एक पर ज़ोर देती हैं। लेकिन अब मेरा कहना यह है कि देहधारी पुत्र के बारे में बोलने वाले सभी बाइबल कथनों को पूरे व्यक्ति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए, न कि किसी एक प्रकृति या दूसरी के लिए। हालाँकि वे एक या दूसरी प्रकृति से संबंधित हैं, कभी-कभी कुछ कथनों में उनकी दिव्यता का विशेष संदर्भ होता है।

जैसे कि, मेरे पास अपने जीवन को ऊपर उठाने का अधिकार है। पुनरुत्थान परमेश्वर का कार्य है। और केवल यूहन्ना 2 में। इस मंदिर को नष्ट कर दो, और तीन दिनों में, मैं इसे ऊपर उठा दूँगा।

यूहन्ना 10 में, मैं अपना जीवन देता हूँ और फिर से लेता हूँ। क्या मसीह खुद को पुनर्जीवित करता है? ओह। यह आश्चर्यजनक है।

यह हमेशा पिता ही होता है, या तो सीधे या जिसे हम दैवीय निष्क्रिय कहते हैं, उसके द्वारा। यीशु को जी उठाया गया। और हमेशा नहीं, लेकिन अधिकतर।

और फिर कभी-कभी, मुझे नहीं पता, आधा दर्जन बार, पुनरुत्थान का श्रेय आत्मा को दिया जाता है। कहीं और यीशु को नहीं। चौथे सुसमाचार में दिव्य मसीह खुद को पुनर्जीवित करता है।

ओह, बेशक, पूर्ण होने के लिए, हम कहेंगे कि त्रिदेव पुत्र को जीवित करते हैं। वास्तव में, मुझे लगता है कि मैं विशेष रूप से पिता, लेकिन आत्मा भी कहूँगा, और कम से कम एक जगह, एक पुस्तक में, पुत्र। मसीह के बारे में बोलने वाले सभी बाइबिल कथन, यहां तक कि वे जो उसकी मानवता या ईश्वरत्व पर भारी जोर देते हैं, उन्हें पूरे व्यक्ति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए।

मनुष्य के बारे में बात मत करो। कोई अलग मनुष्य नहीं है। हालाँकि यह तकनीकी रूप से सच है, लेकिन एक अर्थ में लोगोस एक सार कोस बना हुआ है; त्रिदेव अक्षुण्ण है, और देहधारी पुत्र देहधारण से बाहर होने के कारण कुछ काम करता है, चाहे वह कितना भी बोझिल क्यों न हो।

पिता की इच्छा के अनुसार स्वेच्छा से अपने दिव्य गुणों के प्रयोग को अधीन कर दिया। यहाँ यह माना जाता है कि उन्होंने अपने दिव्य गुणों को पूरी तरह से बरकरार रखा।

कोई केनोसिस नहीं है। उन्होंने खुद को कुछ विशेषताओं से वंचित नहीं किया, यहां तक कि उन सर्वज्ञताओं से भी जिन्हें अवतार के संदर्भ में समझना मुश्किल है। उदाहरण के लिए, क्या एक अवतार व्यक्ति शरीर में एक ही समय में हर जगह मौजूद हो सकता है? नहीं।

पुत्र के रूप में उस गुण को बरकरार रखता है जो अवतार से पूरी तरह बाहर रहता है। लेकिन एक बार फिर, हमारा जोर उस पर नहीं है। मसीह अपनी सभी दिव्य शक्तियों को पूरी तरह से बरकरार रखता है।

वह उन पर कब्ज़ा नहीं छोड़ता, उनका अस्तित्व नहीं छोड़ता, उनका होना नहीं छोड़ता। वह उनका स्वतंत्र प्रयोग नहीं छोड़ता। इसलिए, वह एक शक्तिहीन मसीह है।

उसके पास वे शक्तियां नहीं हैं। नहीं, उसके पास शक्तियां नहीं हैं। उसके पास शक्तियां हैं।

ओह, हाँ, लेकिन वह कभी भी उनका उपयोग नहीं करता है, जैसा कि आज कुछ अच्छे इंजील ईसाई दार्शनिक कहते हैं। स्टीव वेलम का अनुसरण करते हुए, मैं दृढ़ता से, सम्मानपूर्वक, ये लोग

ईश्वर के अच्छे लोग हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है, वे एक अच्छा क्षमाप्रार्थी कार्य कर रहे हैं। मैं जानबूझकर नाम नहीं बताना चाहता।

अगर आप जानना चाहते हैं, तो वेल्लम की किताब के आखिर में पढ़ें। बेशक, उन्होंने नाम बताए हैं। वे उनके साथ सम्मानपूर्वक पेश आते हैं, उनसे उद्धरण देते हैं, और उन्हें न केवल भाइयों के रूप में बल्कि उत्कृष्ट भाइयों के रूप में स्वीकार करते हैं।

लेकिन मुझे और उसे ऐसा लगता है कि दार्शनिकों की प्रवृत्ति कभी-कभी सोला स्क्रिप्टुरा का प्रयोग करने के बजाय सोला फिलोसोफिया का प्रयोग करने की होती है। ऐसा लगता है कि उनका तर्क उस समय शास्त्र पर हावी हो जाता है। लड़के, मैं यह बिना किसी दुर्भावना के कह रहा हूँ।

क्योंकि पवित्रशास्त्र देहधारी पुत्र को ईश्वरीय कार्य बताता है, इसलिए तुम्हारे पाप क्षमा कर दिए गए हैं, वह लूका 2 में उस व्यक्ति से कहता है, जो चल नहीं सकता। खैर, कोई भी ढोंगी ऐसा कह सकता है।

यह साबित करने के लिए कि वह ढोंगी नहीं है, वह कहता है, और वास्तव में, उसके दुश्मन, क्योंकि यीशु उनके मन और दिल को समझने के लिए दिव्य ज्ञान का प्रयोग करता है। ओह, तुम कहते हो, चलो, वह इसे उनके चेहरों पर देख सकता है। आप और मैं इसे उनके चेहरों पर देख सकते हैं, लेकिन वह उनके दिलों को देखकर निश्चित रूप से जानता है।

क्या उसने ऐसा करते हुए सामरी स्त्री के चेहरे को देखा था? उसके पाँच पति थे। नहीं, मुझे नहीं लगता। इसी तरह, जब वह धरती पर था, तो उसे अपने दूसरे आगमन का समय भी नहीं पता था।

उन्होंने हमेशा इन दिव्य गुणों का प्रयोग नहीं किया। उन्होंने अपने ज्ञान की दिव्य शक्ति का प्रयोग नहीं किया। लेकिन इस मामले में उन्होंने ज़रूर किया।

और उसने उस आदमी के पापों को माफ कर दिया था। हम जिस तरह से करते हैं, वैसा नहीं। अरे बहन, क्या तुम मुझे तुम्हारे खिलाफ बोलने के लिए माफ कर दोगी? अरे हाँ, भाई।

यह बहुत बढ़िया है। हम इस बारे में बात नहीं कर रहे हैं। यीशु कह रहे हैं, मैं तुम्हें उसी तरह क्षमा करता हूँ जिस तरह परमेश्वर पापी मनुष्यों को क्षमा करता है।

वाह! अदृश्य चमत्कार। कोई भी इसका दावा कर सकता है।

ओह, हाँ। यह सही है। ठीक है।

ताकि तुम जान सको कि धरती पर मनुष्य के बेटे को पापों को क्षमा करने का अधिकार है। मैं एक प्रत्यक्ष कार्य करने जा रहा हूँ। अपना बिस्तर उठाओ और चलो।

और उसने ऐसा किया। यीशु ने दृश्यमान चमत्कार करके दिखाया कि उसने अदृश्य चमत्कार किया है और पापों को क्षमा करने में दिव्य शक्तियों का प्रयोग किया है। जब वे उसे गिरफ्तार करने आए, तो तुम कौन हो? क्या तुम नासरत के यीशु हो? मैं हूँ, यूहन्ना 18।

धमाका, वे नीचे गिर गए। जॉन बार-बार इस तरह की बात करता है। वह दिखाता है कि मसीह कमज़ोरी में क्रूस पर नहीं जाता है, बल्कि वह शक्ति में क्रूस पर जाता है।

यूहन्ना 13. भोजन के दौरान शैतान ने यहूदा के दिल में यह बात डाल दी थी कि वह उसे धोखा दे, यहूदा शमौन का बेटा। मेरा विश्वास करो, यहूदा नाम के अन्य लोग भी ऐसी छोटी-छोटी बातों पर खुश होते थे।

या यहूदा, जिसे इस्करियोती भी कहा जाता है। अन्य शिष्य जिन्हें यहूदा नाम दिया गया था और अन्य अनुयायी उन योग्यताओं को पाकर बहुत खुश थे। ओह!

यीशु, यूहन्ना 13:3. यह जानते हुए कि पिता ने सब कुछ उसके हाथों में सौंप दिया है और वह परमेश्वर से आया है और परमेश्वर के पास वापस जा रहा है, वह भोजन से उठा, अपने बाहरी वस्त्र उतारे, एक तौलिया लिया, उसे अपनी कमर के चारों ओर बाँधा, और शिष्यों के पैर धोए। यूहन्ना क्या कर रहा है? वह दिखा रहा है कि यीशु एक दिव्य मसीह है जो पूरी तरह से प्रभारी है, और वह स्वेच्छा से क्रूस पर मृत्यु के लिए खुद को प्रस्तुत कर रहा है। हाँ, कभी-कभी पुत्र, जिसके पास अपनी सभी दिव्य शक्तियाँ हैं, उनका उपयोग केवल तभी करता है जब यह पिता की इच्छा में होता है।

मृतकों में से खुद को जीवित करना कोई मानवीय कार्य नहीं है। यह पिता की इच्छा थी कि पुत्र यूहन्ना 2 में कहे कि वह खुद को मृतकों में से जीवित करेगा। यूहन्ना 2, क्या यह 19 और 20 है? यूहन्ना यीशु की गूढ़ टिप्पणी की व्याख्या करता है।

यदि आप और मैं गैर-यहूदियों के आँगन में या शायद महिलाओं के आँगन में खड़े होकर उसे यह कहते हुए सुनें कि, इस मंदिर को नष्ट कर दो, और तीन दिन में मैं इसे बना दूँगा, मैं इसे खड़ा कर दूँगा, तो यह पागलपन जैसा लगता है। यहूदियों ने कहा कि इस मंदिर को बनाने के लिए मंदिर के जीर्णोद्धार के हेरोदेस महान के कार्यक्रम के तहत 46 साल लगे। आप इसे तीन दिन में खड़ा करने जा रहे हैं? जॉन एक संपादकीय टिप्पणी देते हैं, जो उनकी साहित्यिक विशेषताओं में से एक है।

परन्तु वह अपनी देह के मन्दिर के विषय में कह रहा था। जब वह मरे हुएों में से जी उठा, तो उसके चेलों को स्मरण आया कि उसने यह कहा था। जब वह मरे हुएों में से जी उठा।

वे पवित्र शास्त्र और यीशु द्वारा कहे गए वचन पर विश्वास करते थे क्योंकि उनके वचन पहले से ही परमेश्वर के पवित्र वचन के बराबर माने जा रहे थे। हमारे प्रभु ने अपने दिव्य गुणों के प्रयोग को अधीनस्थ कर दिया, जिसे उन्होंने पिता की इच्छा के अनुसार पूरी तरह से बनाए रखा। उन्होंने अपनी दिव्य शक्तियों का उपयोग केवल तभी किया जब यह पिता की इच्छा थी।

इसमें कोई कमी नहीं थी, बल्कि उनकी दिव्य शक्तियों का एक छिपा हुआ प्रकटीकरण था। इसलिए, रूपांतरण के मामले में, मैं इसे इस तरह से कहता हूँ: लैपशेड हटा दिया गया था, और वाटेज बढ़ा दिया गया था। लेकिन आमतौर पर, लैपशेड चालू था, और प्रकाश बहुत कम कर दिया गया था।

कोई प्रभामंडल नहीं। वह वही है जो वह है, लेकिन वह हमेशा वह प्रकट नहीं करता जो वह है, जैसा कि वह तब करता है जब पिता की इच्छा होती है कि वह दिव्य शक्तियों को प्रदर्शित करे। हमें दो राज्यों के सिद्धांत पर विचार करके अपने पाठ्यक्रम को समाप्त करने की आवश्यकता है।

सुधार के बाद, लूथरन और सुधारवादी धर्मशास्त्रियों ने कुछ सत्यों पर विचार किया। सुधारकों ने इन सत्यों की पुष्टि की, लेकिन यह उनके धर्मशास्त्रीय उत्तराधिकारी थे जिन्होंने उन्हें तथाकथित दो-राज्य सिद्धांत में व्यक्त किया। फिलिप्पियों 2, जिसे हमने कई बार देखा, फिलिप्पियों 2:6 से 11, दो राज्यों के सिद्धांत को पवित्रशास्त्र में कहीं और प्रस्तुत नहीं करता है।

आपस में भी यही मन रखो, पद 5, जो मसीह यीशु में तुम्हारा है। इस महान क्राइस्टोलॉजी का उद्देश्य यीशु को विनम्रता के एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करना है, जिसका अनुसरण फिलिप्पियों, विशेष रूप से यूओदिया और सुन्तुखे, अपने स्वस्थ, स्वस्थ चर्च में एकता को बढ़ावा देने के लिए कर सकते हैं, जिन्होंने सोचा कि वह ईश्वर के रूप में थे, फिलिप्पियों 2:6, ईश्वर के साथ समानता को अपने कब्जे में रखने की चीज़ नहीं माना, बल्कि एक सेवक का रूप धारण करके खुद को खाली कर दिया, मनुष्यों की समानता में पैदा हुआ, और मनुष्य के रूप में पाया गया, उसने मृत्यु, यहाँ तक कि क्रूस पर मृत्यु तक आज्ञाकारी बनकर खुद को दीन किया। ये आयतें अपमान की स्थिति के बारे में बताती हैं।

दो अवस्थाएँ, दो अवस्थाएँ सिद्धांत कहता है, हमारे प्रभु दो कालानुक्रमिक चरणों से गुज़रे, उनके गर्भाधान और जन्म से लेकर उनके दफ़न तक, अपमान की वह अवस्था है जिसके बारे में हमने अभी पढ़ा। इसमें उनका गर्भाधान, उनका जन्म, उनके प्रलोभन, उनके जीवन में संघर्ष, उनकी मृत्यु और, चौंकाने वाली बात, उनका दफ़न शामिल है। भगवान को दफनाया गया? नहीं, लेकिन ईश्वर-मनुष्य को दफनाया गया।

यह अपमानजनक है। यह मानवजाति द्वारा उसके प्रति अनादर का प्रतीक है। फिर, फिलिप्पियों 2 में आने वाली आयतें, अर्थात् 9 से 11, उत्कर्ष की स्थिति का वर्णन करती हैं।

अर्थात्, उसके पुनरुत्थान से लेकर उसके दूसरे आगमन तक की संगत स्थितियों के साथ एक कालानुक्रमिक चरण। इसलिए, जब से उसने क्रूस पर मृत्यु के बिंदु तक खुद को दीन किया, परमेश्वर ने उसे बहुत ऊंचा किया और उसे वह नाम दिया जो हर नाम से ऊपर है ताकि यीशु के नाम पर, स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हर घुटना झुके, और हर जीभ यह स्वीकार करे कि यीशु मसीह परमेश्वर पिता की महिमा के लिए प्रभु है। मसीह की दो अवस्थाएँ हैं उसकी दीनता, अपमान और उसकी महिमा की अवस्था।

संगत स्थितियों के साथ दो कालानुक्रमिक चरण। अपमान, उत्कर्ष। यह पूरा शीर्षक यह समझाने का एक तरीका है कि अब स्वर्ग में यीशु धरती पर यीशु से कैसे अलग है।

अंतर यह नहीं है, जैसा कि कई ईसाई मानते हैं, कि उन्होंने अपनी मानवता त्याग दी। गलत। अवतार स्थायी है।

अंतर यह है कि वह इस समय अवधि में, साढ़े 33 साल, अपमान, कमजोरी, भेद्यता, आवश्यकता और पीड़ा की स्थिति में रहा, जिसका समापन क्रूस पर उसकी मृत्यु के साथ हुआ। नहीं, उसका समापन उसके दफन में हुआ। लेकिन शुक्र है, इसलिए, भगवान ने उसे बहुत ऊंचा किया है, और इसी तरह।

उसके उत्कर्ष की अवस्था में उसका पुनरुत्थान, उसका स्वर्गारोहण, उसका परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठना, पित्तकुस्त के दिन आत्मा को उंडेलना, उसका हमारे लिए मध्यस्थता करना, तथा उसका उत्कर्ष की अवस्था और संपूर्ण सेवकाई उसके दूसरे आगमन में पूर्ण होती है। फिलिप्पियों के इस अंश में दो समस्याएँ हैं, और मैंने पहले भी उनका उल्लेख किया है, बल्कि उनका उल्लेख किया है। एक समस्या यह है कि हर घुटना झुकेगा, हर जीभ स्वीकार करेगी।

क्या यह सही है? क्या इसका मतलब यह नहीं है कि हर कोई बच गया है? और दूसरा सवाल यह है कि क्या यह अंश मसीह के ईश्वरत्व की शिक्षा देता है? दो सवालों का जवाब है: नहीं और हाँ। यशायाह 45 पृष्ठभूमि है। इस अध्याय में यहोवा ही वक्ता है।

मैं यहोवा हूँ, कोई दूसरा नहीं, 45:18. मेरे सिवा कोई दूसरा परमेश्वर नहीं. मेरे सिवा कोई दूसरा नहीं, 21.

मैं यहोवा हूँ, कोई दूसरा नहीं है, 22:23 , मैंने अपनी ही शपथ खाई है, एक गंभीर वचन, मेरे मुँह से धार्मिकता में एक वचन निकला है जो वापस नहीं आएगा। यहोवा कहते हैं, मेरे लिए हर घुटना झुकेगा, हर जीभ निष्ठा की शपथ खाएगी।

और यहोवा फिलिप्पियों 2:9 से 11 में यीशु बन जाता है। वह परमेश्वर है। यहाँ पुस्तक के अंत हैं।

इसमें एक समावेश है। अंश के आरंभ और अंत में, वह ईश्वर के रूप में विद्यमान था। और चाहे रूप का अर्थ आवश्यक प्रकृति हो, जैसा कि बी.बी. वारफील्ड और अन्य महान विद्वानों ने सिखाया, या अधिक हालिया दृष्टिकोण, चाहे वह सेवक के रूप के समानांतर हो और इसका अर्थ बाहरी रूप हो, जो मुझे लगता है कि ऐसा ही है, फिर भी, ईश्वर के अलावा किसी और के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि वह ईश्वर के रूप में विद्यमान था।

इस अनुच्छेद की शुरुआत में पुत्र परमेश्वर है, और वह यहोवा है, जिसके सामने हर घुटना झुकता है और जिसके आगे हर जीभ स्वीकार करती है। तो, यह हर जीभ है। हाँ।

यह हर घुटने की बात है। हाँ। तो फिर हर कोई बच गया, है न? नहीं।

मैं यह सिर्फ बाइबल की शिक्षा की सुसंगतता के लिए नहीं कह रहा हूँ। नया नियम इतना स्पष्ट है, यीशु इस शिक्षा के मुख्य लेखक हैं, कि हर कोई नहीं बच सकता और नरक होगा। लेकिन यशायाह 45 में अगले दो छंद इस मामले को स्पष्ट करते हैं।

हर घुटना झुकता है, हर जीभ निष्ठा की शपथ खाती है, लेकिन केवल प्रभु में ही मेरे बारे में कहा जाएगा, हमारी धार्मिकता और शक्ति। यशायाह 45, 24। उसके पास आकर शर्मिंदा होना पड़ेगा।

ओह, वे घुटने टेकेंगे, और वे अपनी जीभ से कबूल करेंगे। जो लोग उसके खिलाफ क्रोधित हैं, खोए हुए, दुष्ट, उन्हें अपनी गलतियों को स्वीकार करने के लिए बाध्य किया जाएगा, उनके जीवन की बड़ी गलती, ईश्वर के पुत्र का कम आंकलन, घुटने टेकने से इनकार करना और इस जीवन में उनके प्रभुत्व को स्वीकार करना। अन्य, प्रभु में, इस्राएल की सभी संतानें, अर्थात्, चाहे वे यहूदी हों या अन्यजाति जो ईश्वर के नए नियम के चर्च का निर्माण करते हैं, जो वास्तव में सच्चा इस्राएल है, इस्राएल की सभी संतानें न्यायोचित ठहराई जाएँगी और महिमा प्राप्त करेंगी।

सभी झुकते हैं, सभी स्वीकार करते हैं, लेकिन सभी बच नहीं पाते। तो, इस तरह से दो समस्याएँ हल हो जाती हैं। उनके आधिपत्य की सार्वभौमिक स्वीकृति, लेकिन सार्वभौमिक उद्धार नहीं।

बहुत से लोग जो झुककर स्वीकारोक्ति करेंगे, वे हार जाएंगे। और वे उसके खिलाफ क्रोधित होंगे, लेकिन इससे उन्हें कोई फ़ायदा नहीं होगा। वे उसे हरा नहीं सकते।

वे उसके सामने दीन हो जाते हैं और स्वीकार करते हैं कि वे अनजाने में उसे महिमा देते हैं, न कि उपासक के रूप में, बल्कि उन लोगों के रूप में जो उसके अधीन हैं जो ईश्वर के अवतार हैं। दूसरी समस्या यह है कि कुछ लोग उसके ईश्वरत्व पर सवाल उठाएँगे; इस पर सवाल नहीं उठाया जाना चाहिए। वह ईश्वर के रूप में विद्यमान था; उसने एक दास का रूप धारण किया, और पिता ने उसे उठाया और उसे महान बनाया।

ओह, यह पिता की महिमा के लिए है। यह अंश स्पष्ट है। लेकिन यशायाह 45 की भाषा, जो यहोवा से संबंधित थी, अब सीधे परमेश्वर के पुत्र को सौंप दी गई है। इसलिए, हम फिर से मसीह की सेवकाई में महिमा करके निष्कर्ष निकालते हैं।

पहली बार, वह अपने लोगों के लिए मरने आया और तीसरे दिन फिर से जी उठा, उसने उन सभी को अनंत जीवन का वादा किया जो उस पर विश्वास करते हैं। अभी अनंत जीवन, नए जीवन और पुनर्जन्म में। युग के अंत में अनंत जीवन जब यीशु मृतकों के पुनरुत्थान में वापस आएगा।

इससे परमेश्वर की महिमा होगी। हर कोई यीशु की महिमा करेगा। और मसीह को प्रभु के रूप में स्वीकार किया जाएगा।

सभी झुकेंगे, सभी अपनी जीभ से स्वीकार करेंगे ताकि 1 कुरिन्थियों 15 में व्यवस्थित रूप से पूरा हो सके। इस बिंदु पर, पुत्र तब राज्य को पिता को सौंप देगा ताकि परमेश्वर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा सब कुछ हो सकें। उसके पवित्र नाम की स्तुति करो।

आमीन। मसीह के सिद्धांत पर हमारा पाठ्यक्रम यहीं समाप्त होता है। हमने पैट्रिस्टिक ऐतिहासिक धर्मशास्त्र या क्राइस्टोलॉजी का अन्वेषण और अध्ययन किया।

और हमने देखा कि एक पुरुष और एक महिला के लिए, उन्होंने ईश्वर के दिव्य पुत्र के साथ ऊपर से शुरुआत की जो यीशु में अवतरित हुए। हमने आधुनिक क्राइस्टोलॉजी की खोज की, जिसका अधिकांश भाग बहुत अलग प्रारंभिक बिंदु था। मैं स्वीकार करता हूँ कि आप आधुनिक लोगों से क्षमा या संचार के लिए अपेक्षाकृत नीचे से शुरू कर सकते हैं।

मैं समझता हूँ। लेकिन मैं यहाँ यही नहीं कह रहा हूँ। आधुनिक धर्मशास्त्र निश्चित रूप से नीचे से शुरू हुआ है, बार-बार, ज़्यादातर समय।

और इसका परिणाम एक मानव मसीह है जो ईश्वरीय नहीं है और जो हमें उनके पापों से बचाने में सक्षम नहीं है। मेरे लिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि चर्च और संप्रदाय जो इस पर जोर देते हैं वे कम होते जा रहे हैं। इसमें कोई सुसमाचार नहीं है।

इसमें कोई सुसमाचार नहीं है। फिर हमने अपना समय लिया और हमारे प्रभु के बारे में महान बाइबिल शिक्षाओं के माध्यम से काम किया। वह पहले से ही मौजूद थे।

परमेश्वर का पुत्र बेथलेहम में मनुष्य का पुत्र बनने से पहले ही अस्तित्व में था। अवतार परमेश्वर का महान चमत्कार है। मेरा मतलब क्रूस और खाली कब्र को हटाना नहीं है।

निश्चित रूप से, वे सुसमाचार का केंद्र हैं। लेकिन कोई अवतार नहीं, कोई क्रूस नहीं। कोई अवतार नहीं, कोई खाली कब्र नहीं।

लेकिन एक अवतार हुआ। चमत्कारिक ढंग से, रहस्यमय ढंग से, शाश्वत, सर्वशक्तिमान ईश्वर, पुत्र, हम में से एक बन गया। वाह! परिणाम यह है कि वह ईश्वर है।

और हमने पाँच महान ऐतिहासिक प्रमाणों के साथ उनके ईश्वरत्व को बहुत विस्तार से देखा। वह पाप से अलग एक सच्चा इंसान बन गया, जो मानवता का एक अनिवार्य हिस्सा नहीं है। आदम और हव्वा ने इसे दिखाया।

यीशु ने इसका उदाहरण दिया। और मृतकों के पुनरुत्थान में, हम इसे परमेश्वर की कृपा से जीएँगे। हमने उनके एक-व्यक्तित्व और उससे जुड़ी कुछ बातों के बारे में सोचा।

एक तरफ नेस्टोरियनवाद के चरीबडीस से बचते हुए, उसे दो भागों में विभाजित करते हुए, और दूसरी तरफ मोनोफ़िज़िटीज़्म या यूटीचियनवाद के चरीबडीस से बचते हुए जो उसे न तो ईश्वर और न ही मनुष्य में मिला देता है। एक तरह का तीसरा संकर। हमने उसके गुणों के प्रयोग के बारे में सोचकर निष्कर्ष निकाला।

और यह सब कहने का तात्पर्य यह है कि हम जो उसे जानते हैं और उससे प्रेम करते हैं, उसकी आराधना करते हैं, उसकी आराधना करते हैं और उसकी सेवा करते हैं और महिमा के प्रभु की गवाही देते हैं जो हम पापियों और हमारे उद्धार के लिए सेवक बन गया। उसके पवित्र नाम की स्तुति करो।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन की क्राइस्टोलॉजी पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 20 है, सिस्टेमेटिक्स, मसीह की मानवता, गुणों का संचार, गुणों का अभ्यास, दो राज्य, फिलिप्पियों 2:1 से 11।